By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

महावीर के जीवन और उपदेश
(The life and teachings of Mahavir)

जैन परम्पराओं के अनुसार महावीर से पहले इस धर्म के 23 गुरु हो चुके थे जो तीर्थंकर कहलाते थे। महावीर चौबीसवें तीर्थंकर थे। प्रारम्भिक तीर्थंकरों के संबंध में जानकारी वैदिक साहित्य में मिलती है। सबसे पहले तीर्थंकर ऋषभदेव थे। केवल अंतिम दो अर्थात 23वें और 24वें तीर्थंकर का ही वर्णन इतिहास में मिलता है। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी ने अपने अनुयायियों को जैन-धर्म के चार प्रमुख सिद्धांत बतलाये थे- 1. अहिंसा 2. सत्य सम्भाषण 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह। महावीर स्वामी के जन्म से ठीक 250 वर्ष पूर्व उन्होंने निर्वाण प्राप्त किये।

— ! महावीर का जीवनवृत ! —

जैनियों के सबसे अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी थे। जैन-धर्म को व्यापक तथा लोकप्रिय बनाने का श्रेय मुख्यत: इन्हीं को है। इनका जन्म आधुनिक बिहार राज्य के मुजफ्फर जिला में स्थित वैशाली के समीप कुण्डग्राम में ईसा से 599 वर्ष पूर्व हुआ था। इनके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो ज्ञातृकों के ज्ञातृक कुल के थे। इनकी माता का नाम त्रिशला था जो वैशाली के राजा चेटक की बहन थी। सिद्धार्थ को त्रिशला से तीन सन्तानें हुई थी एक कन्या और दो पुत्र। बड़े पुत्र का नाम नन्दिवर्धन था और छोटे पुत्र का नाम वर्धमान। यही आगे चलकर महावीर के नाम से प्रसिद्ध हुए। वर्द्धमान को बड़े होने पर यशोदा नामक युवती से विवाह हुआ जिससे एक लड़की पैदा हुई। माता पिता के देहांत के बाद तीस वर्ष की उम्र में अपने बड़े भाई नन्दिवर्धन से आज्ञा लेकर वर्धमान ने घर छोड़ संन्यास की राह ली। उन्होंने वन में जाकर ज्ञान प्राप्ति के लिए बारह वर्ष तक कठोर तपस्या की। लोगों ने उन्हें साधुओं

से मारा। इनपर ईंट, पत्थर तथा गंदी वस्तुएँ फेंकी, उनकी खिल्ली उड़ाई गई और उन्हें तरीकों से उनकी तपस्या भंग करने का प्रयत्न किया। लेकिन वे अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। इस कठोर तपस्या से उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और उनका हृदय ज्ञान लोक से जगमगा उठा। अब उन्होंने सांसारिक बन्धनों को तोड़कर माया-मोह से छुटकारा पा लिया। अतः वे निग्रन्थ कहलाये जिसका अर्थ होता है - बन्धहीन। उन्होंने अपने इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर ली थी। अतएव वे जिन कहलाये। उन्हें बारह वर्ष की तपस्या के पश्चात जृम्भिकग्राम के बाहर ऋजुपालिका नदी के तट पर कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। तभी से वे अर्हत (पूजनीय) कहलाने लगे। अपार धैर्य के साथ उन्होंने सभी मुसीबतों का सामना किया। अतएव वे महावीर कहलाये। जितेन्द्रिय बन जाने से वे जैन कहलाने लगे।

ज्ञान प्राप्त करने के बाद तीस वर्ष तक उन्होंने घूम-घूमकर मगध, कौशल, अंग, मिथिला, काशी आदि प्रदेशों में अपनी शिक्षा का प्रचार किया।

— !महावीर के उपदेश:-

महावीर ने पाँच मुख्य उपदेश दिये :—

(i) अहिंसा (ii) सत्य (iii) अस्तेय (चोरी न करना) (iv) अपरिग्रह
(v) ब्रह्मचर्य।

(i) अहिंसा :- महावीर घोर अहिंसावादी थे। उनका कहना था कि संसार के कण-कण में जीव है। उनकी हिंसा नहीं करनी चाहिए। उनके शिष्य रात्रि आरम्भ होने के पहले ही भोजन कर लेते थे ताकि अन्धकार में कोई कीड़े-मकोड़े न मर जाए।

(ii) सत्य :- सत्य का मतलब है झूठ नहीं बोलना चाहिए। अप्रिय या कठोर बात नहीं बोलनी चाहिए। किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए

(iii) अस्तेय :- किसी की चीज चुरानी नही चाहिए। चोरी का माल खरीदना, किसी तरह का मिलावट करना, कम तौलना, सरकारी आदेश का पालन न करना इत्यादि भी चोरी के ही प्रकार हैं। इनसे बचना चाहिए।

(iv) अपरिग्रह :- धन का संग्रह नही करना चाहिए। विनोबा भावे का कहना था - पेट भर खाओं, लेकिन पेटी भर न रखो। धन से मोह बढ़ता है। मोह से बन्धन और पक्का हो जाता है। इस प्रकार धन मुक्ति के मार्ग में बाधक है।

(v) ब्रह्मचर्य :- काम वासना को मारना चाहिए। कामुकता मुक्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधक है।

— : त्रिरत्न : —

महावीर के अनुसार मनुष्य अज्ञानतावश ही काम, क्रोध, मोह और मद के वशीभूत होता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए इन तीन साधनो का प्रतिपादन किया जो त्रिरत्न के नाम से विख्यात हुए।
ये हैं :- (i) सम्यक ज्ञान (ii) सम्यक दर्शन और (iii) सम्यक चरित्र।

(i) सम्यक ज्ञान का अर्थ है ; सच्चा और पूर्ण ज्ञान। बिना सम्यक ज्ञान के मुक्ति की प्राप्ति नही होती, उसका ज्ञान समस्त तीर्थंकर के उपदेशों के अध्ययन से होता है।

(ii) सम्यक दर्शन :- सम्यक दर्शन भी इसके लिए आवश्यक है। सभी मनुष्यों के लिए यह अच्छा है कि वे संसार के सभी जीवधारियों को एक समान समझे। यही अर्थ सम्यक दर्शन था। सम्यक दर्शन से ही सम्यक ज्ञान की प्राप्ति होती है और मनुष्य को अज्ञानता क्रोध, लोभ, मोह आदि से छुटकारा प्राप्त हो जाता है।

(iii) सम्यक चरित्र :- इसका अर्थ है उच्च नैतिक स्तर। इसके लिए मनुष्य को अपनी इन्द्रियों, भाषण और कर्मों पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए। इसकी प्राप्ति इन्द्रियों, विचारो और भावनाओं पर नियंत्रण रखने से होती है।